Roll No. : ....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **3**

AFMA–147

M.A. (Final) Examination, 2023

SANSKRIT

वर्ग (अ) साहित्य

Paper - IX (ग)

(विशेष कवि अध्ययन-कालिदास)

Time : 3 Hours] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. समस्तानां प्रश्नानाम् उत्तरं दीयताम्। उत्तर-सीमा **पञ्चाशत्** शब्दाः विद्यन्ते–

   (i) ब्रह्मचारीरूपेण कः पार्वत्याः आश्रमे गतः ? (संस्कृते उत्तरं दीयताम्)

   (ii) 'स्तपः क्ववत्से! क्व च तावकं वपुः' इति कोऽवदत् ? (संस्कृते उत्तरं दीयताम्)

(iii) परित्यक्ता सीता कस्य आश्रमेऽवसत् ?

(iv) कस्य शोकः श्लोकत्वम् आगतः ?

(v) मालविकाग्निमित्रस्य विदूषकस्य नाम किम् ?

(vi) कस्मिन् ऋतौ सर्वं चारूतरं भवति ?

(vii) कालिदासस्य लिखितानि नाटकानि कानि ?

(viii) कालिदासस्य विषये प्रसिद्धोक्तिः का ?

(ix) कालिदासेन 'अस्ति' इति पदमवलम्ब्य कस्य काव्यस्य रचना कृत ?

(x) कालिदासस्य प्रिया शैली का आसीत् ?

खण्ड–ब

नोट :– सप्तसु **पञ्च** प्रश्नाः समाधेयाः। द्वितीय–तृतीयौ प्रश्नौ अनिवार्यौ स्तः–

2. अधोलिखितस्य पद्यस्य संस्कृतभाषायां व्याख्या कार्या–

मनीषिताः सन्ति गृहेषु देवतास्तपः क्व वत्से क्व च तावकं वपुः।
पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं शिरीष पुष्पं न पुनः पतत्त्रिणः॥

3. अधोलिखितस्य पद्यस्य संस्कृतभाषायां व्याख्या कार्या–

अतन्द्रिता सा स्वयमेववृक्षकान् घटस्तनप्रस्रवणैर्व्यवर्धयत्।
गुहोऽपि येषां प्रथमाप्रजनानां न पुत्रवात्सल्यमपाकरिष्यति॥

4. अधोलिखितस्य पद्यस्य व्याख्या कार्या–

स पौरकार्याणि समीक्ष्य काले रेमे विदेहाधिपतेदुहित्रा।
उपस्थितश्चारु वपुस्तदीयं कृत्वोपभोगोत्सुकयेव लक्ष्म्या॥

5. अधोलिखितस्य पद्यस्य व्याख्या कार्या–

पात्रविशेषे न्यस्तम् गुणान्तरम् व्रजति शिल्पमाधातुः।
जलमिव समुद्रशुक्तौ मुक्ताफलताम् पयोदस्य॥

6. अधोलिखितस्य पद्यस्य व्याख्या कार्या–

श्वेर्मयूरवैरभितापितो भृशं विदह्यमानः पथि तप्तपांसुभिः।

अवाङ्गमुखो जिह्मगतिः श्वसन् मुहुः फणीमयूरस्य तले निषीदति॥

7. रघुवंशमवलम्ब्य भारतस्य धार्मिक स्थितेः विवेचनं कुरुतः।

8. कालिदासस्य प्रकृतिवर्णनं वैशिष्ट्यं प्रतिपादनीयम्।

खण्ड–स

नोट :– चतुर्ष **द्वौः** प्रश्नौ समाधेयौ।

9. कालिदासस्य कृतिषु 'रसयोजनां' सोदाहरणं विवेचयत्।

10. रघुवंशस्य महाकाव्य दृष्ट्या समीक्षा कार्या।

11. नाट्यशास्त्रीयदृष्ट्या मालविकाग्निमित्रस्य नाट्यकलायाः समीक्षा करणीया।

12. कालिदासस्य रचनाः काः ? तेषां संक्षेपेण परिचयः देयः।